वर्ष 21 अंक 06
27 जून 2023
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 जून 2023
पंजीयन संख्या

ओ३म्

करें

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

।। ओ३म्।।

वैदिक रवि मासिक

वर्ष 21 — अंक 04

27 जून 2023

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,123

विक्रम संवत् 2080

दयानन्दाब्द 111

सलाहकार मण्डल

श्री ललित नागर

पं. रामलाल शास्त्री 'विद्याभास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री प्रकाश आर्य

कार्यालय फोन : 0755-4220549

सम्पादक

अतुल वर्मा

फोन : 07324-226566

सह सम्पादक

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा

सदस्यता

एक प्रति .... ₹ 20,00

वार्षिक .... ₹ 300,00

आजीवन .... ₹ 2000,00

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 .... ₹ 500

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) .... ₹ 400

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .... ₹ 250

चौथाई पृष्ठ .... ₹ 150

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 04
- सोते रहे गर यूं ही तो, गुलिश्ता फिर 08
- महर्षि दयानन्द के जीवन से.... 10
- समृद्धि का मूल मन्त्र – एकता और पुरुषार्थ 12
- ये कैसी हिन्दू की विशेषता 14
- शपथ 15
- वेदों की दृष्टि में धर्म का स्वरुप 16
- पाप से दूर हों 18
- जन विश्वास का महत्व 19
- वेद सुधा 20
- स्वर्ग सा समय यह अपना न गवाओं 22
- समाचार 23

सम्पादकीय :

नागरिक संहिता समान व्यवहार कानून

UCC. UNIFORM CIVIL CODE

समान व्यवहार संहिता प्रभावशील होना राष्ट्र हित में राष्ट्र सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक हैं। सबसे प्रथम तो यह कि एक देश के नागरिको पर अलग अलग न्याय व्यवस्था लागू हो यह अपने आप में अव्यवहारिक व आश्चर्य जनक हैं।

आज देश अनेक विपरीत परिस्थितियों से जूझ रहा हैं। आंतरिक और बाहरी खतरे नित बढ़ते जा रहे हैं। यह सर्व विदित है कि हजारों सनातन धर्मियो के मध्य कोई अन्य सम्प्रदाय का व्यक्ति या परिवार तो सुरक्षित रहता हैं, किन्तु साम्प्रदायिक विचार धारा को ही महत्व देने वालों की संख्या जब बढ़ जाती है तो वहां उनकी कौम के अतिरिक्त दूसरे व्यक्तियों का वहां रहना मुश्किल हो जाता हैं। इतना ही नहीं उन्हे वहां से पलायन करने के लिए मजबूर किया जाता हैं। पलायन करने के लिए हर प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है हिन्सा को हथियार बनाया जाता हैं, परिवार सम्पत्ती, जीवन सब असुरक्षित हो जाते हैं। इसके प्रमाण है काश्मीर केरल मेवात, पं. बंगाल, और

देहली शहर में स्थित कई कांलोनियों से सनातन धर्मी हिन्दुओं का पलायन हो गया।

ऐसी इस देश में अनेक स्थानों पर परिस्थितियां निर्मित हो गई है और निरंतर बढ़ती जा रही हैं। यह सब क्यों हो रहा है ? यह आकस्मिक नहीं एक योजना बद्ध विचार धारा का परिणाम हैं। इन सबके पीछे एक ही कारण हैं। हिन्दुओं की संख्या से अधिक बड़ी संख्या बढ़ाकर वहां उनके विरूद्ध ऐसा वातावरण निर्मित कर देना ताकि वे वहां से पलायन करें। यदि इसी प्रकार चलता रहा तो आगामी कुछ वर्षो में इस देश पर पुनः एक सम्प्रदाय का ही आधिपत्य हो जावेगा।

आज 22 प्रतिशत आबादी में यह स्थिति है देश में अराजकता को बढ़ा रहे है कुछ सालो में क्या होगा जब उनकी जन संख्या में और वृद्धि हो जायेगी। इसलिए राष्ट्र हित में जनसंख्या नियंत्रण होना आवश्यक है।

इस हेतु इन बातों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है

1. विवाह योग्य लड़के लड़कियों की आयू समस्त देश में समान होनी चाहिए। हिन्दू विवाह अधिनियम में लड़की की आयू 18 वर्ष या उससे अधिक होना आवश्यक हैं। वैसे सनातन धर्मी और अन्य मतावलंबी विवाह लड़की की 19 से 25, 28, 30 तक की आयू प्रायः में करते हैं। किन्तु इस्लाम में 15 वर्ष की आयू में ही लड़की की शादी करना वैधानिक हैं। यही लड़की 25 साल की उम्र तक जब तक अन्य वर्ग के लोगों में विवाह होता है तब तक 4 से 5 बच्चों को जन्म दे देती हैं। जन संख्या वृद्धि में असमानता का यह मुख्य कारण हैं।

2. हिन्दू और दूसरे मजहब वालों की एक ही पत्नी होती है। बिना तलाक के या पहली पत्नी की जीवित अवस्था में कोई दूसरी पत्नी नहीं रख सकता। किन्तु इस्लाम में 4 शादी वैध हैं। इससे जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा मिल रहा हैं। एक पुरूष चार पत्नियों से विवाह कर अनेक बच्चे पैदा कर सकता हैं। इसलिए बहु विवाह पर भी प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

3. प्रत्येक शासन में किसी भी जाति किसी भी सम्प्रदाय के नागरिको के हितो की रक्षा करना उसका नैतिक दायित्व हैं। फिर वे चाहे किसी भी जाति या सम्प्रदाय के

अनुयायी क्यों न हो।

यहां यह विचारण योग्य है कि भारत में मुस्लिम महिलाओं को वे सब अधिकार प्राप्त नहीं है जो हिन्दु महिलाओं को प्राप्त हैं। तलाक, मेन्टेनेन्स, गोद लेने का अधिकार पति की सम्पत्ती में अधिकार ऐसे अनेक अधिकारों से वंचित कर रखा हैं। यह मुस्लिम महिलाओं के साथ अन्याय है इस पर भी समान रूप से कानून बनना चाहिए। शासन एक राजा की भांती प्रजा का पालक पिता संरक्षक होता हैं। उसका नैतिक दायित्य होता है कि किसी के साथ भी किसी प्रकार का भेद भाव या अन्याय ना होने दे। यदि ऐसा कुछ होता है तो उसे ठीक कर सबके हितों की रक्षा करें।

जनसंख्या किसी की बढ़े इसमें किसी को कोई आपत्ती नहीं होना चाहिए। किन्तु जहां जनसंख्या समाज व राष्ट्र के लिए समस्या बन जाये वहां नियन्त्रण आवश्यक हैं। वर्षो पूर्व जब कांग्रेस सत्तारूण थी तब जनसंख्या नियन्त्रण हेतु प्रचार किया बचे 1 या 2 अच्छे। इसका पालन हिन्दुओं सहित इस्लाम को छोड़ कर सभी ने माना उनके परिवार सीमित होने लगे। किन्तु इसके विपरीत कई परिवारों में 4 से 16 बच्चे एक परिवार में जन्म लेते रहे और आज भी ले रहे हैं यह इस्लाम के मानने वाले हैं।

आज देश में बेरोजगारी का राग सब अलाप रहे है, जनसंख्या का दबाव राष्ट्र की उन्नति में कई प्रकार से बाधक बन रहा हैं। साम्प्रदायिक कट्टरता अपनी संख्या बढ़ाकर पूरे देश पर अपना वर्चस्व व आधिपत्य करना चाहते हैं। यह कट्टरता इसलिए भी है क्योकि उनकी इस मान्यता का आधार उनकी मजहबी पुस्तक है, मजहबी तालीम हैं।

सम्पूर्ण भूमि इसी विचार धारा ने लगभग 55 देशों का इस्लामी करण किया जो पहले, हिन्दू, बौद्ध, यहुदी, ईसाई थे। इसका आधार जन संख्या वृद्धि कर अपनी शक्ति बढ़ायी और क्रूरता हिंसा से उन्हे ईस्लामी देश बनाया। इस भावना से सतर्कता आवश्यक है और यह बिल पास होना राष्ट्र हित में हैं।

भारत में सत्ता का आधार नागरिकों की संख्या पर निर्भर करता हैं। जनसंख्या वृद्धि की आगे कुछ वर्षो तक यदि यही स्थिति रही तो केवल निर्वाचन के निर्णयों से ही देश की

स्थिति बदल जायेगी। इस्लाम की उनकी धार्मिक मान्यता भी है कि पूरी धरती पर इस्लाम का शासन होना चाहिए। इस योजना में वे सफल भी होते जा रहे है 57 देश जो कभी जैन, बौद्ध, हिन्दू, यहूदी, पारसी थे अब पूरी तरह इस्लामिक देश हैं।

भारत में भी मुगल राज्य में धर्मान्तरण हेतु नर संवहार, कत्लेआम, बलात्कार, लूट जैसी क्रूरता भी हुई। देश में आज जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है जो बेरोजगारी आवास, स्वास्थ, जैसी अनेक समस्यायें खड़ी कर रहा हैं। जनसंख्या नियंत्रण की ओर मजहबी विचार धारा का कोई सहयोग नहीं है उनका लक्ष्य तो केवल मजहब है, जिसके लिए संख्या बढ़ाना हैं। इस प्रकार यह जनसंख्या वृद्धि किसी भी दृष्टि से भावी खतरा हैं।

देश में सिक्ख, जैन, बौद्ध, पारसी, यहुदी, ईसाई भी अल्पसंख्यक है किन्तु ये इसमें कोई आपत्ती क्यों नहीं ले रहे ? क्योकि वे इस अधिनियम को राष्ट्र हित में मानते हैं उन्हें इससे कोई क्षति नहीं होगी। आपत्ती वे ले रहे हैं जो महिला को पुरूषों के समान सम्मान व अधिकार देना नहीं चाहते महिलाओं को दोयम दर्जे का मानते हैं।

दुर्भाग्य से हिन्दुओं में ही कुछ तथा कथित हिन्दू सत्ता व राजनीति के लिए जी रहे ऐसे व्यक्ति मुस्लिम वोट बैंक के लिए इस कानून का विरोध कर रहे हैं। यह बहुत बड़ी भूलकर रहे है देश और संस्कृति से अधिक महत्व अपने स्वार्थ में देना एक महान पाप है भावी पीढ़ी के लिए अभिषाप बनाने में सहयोग कर रहे हैं।

अतः प्रत्येक भारतीय को राष्ट्र हित में इस कानून का समर्थन 13 जुलाई तक निम्न पते पर भेजकर करना चाहिए विधि आयोग मेम्बर सेक्रेटरी लॉ कमीशन ऑफ इंडिया, चौथा फ्लोर लोकनायक भवन खान मार्केट नई दिल्ली 110003

membersecretary-lci@gov.in

जिसे खुद न हो होश अपने सम्भलने का
खुदा भी उस कौम की हिफाजत नहीं करता

सोते रहे गर यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड जायेगा

सोते रहे गर यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।
कली खिलने से पहले ही, पतझड़ कहर ढायेगा।
रहनुमा बने हुए है जो, आज वतन के,
वे ही दुश्मन बने हैं, इस चमन के।
माली के हाथ ही डाल पर, कैंची चल रही है।
हम समझ ही न पाये, कौन गलत, कौन सही है।।
डर है काला अतीत इस गफलत से, फिर दोहराएगा,
सोते रहे यूं ही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।1।।
सींचने का बहाना कर जो, मठ्ठा जड़ में डाल रहे,
ऐसे जहरीले नागों को, अपने ही घर में पाल रहे।
आकमण हो रहा संस्कृति पर, भंवर में उलझी नांव है,
कहां कहां लगावे मरहम, पूरे जिस्म पर तो घाव है।
अभी भी वक्त है, सभंल गए तो, वतन बच जायेगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जाएगा।।2।।
माली गद्दार विश्वास घाती, और बहरूपिये हैं,
विश्वास में ही विष के काण्ड, हजारों किए हैं।
पर यहां तो अफीम से भी गहरा नशा है,
राष्ट्र प्रेम बस, नारों में ही बसा है।
हम भले बन सोच रहे, जो हो रहा होने दो,
उजड़ जाए चमन, हमे तो बस सोने दो।
पर ध्यान रख ये आशिंया ही जल गया, तो तू भी नहीं बच पायेगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।3।।
स्वार्थ की मदिरा पीकर, ओ जिन्दा रहने वालों,
भूलकर अतीत पर, जरा नजर तो डालो।

जिनकी बदौलत आज आजाद कहलाते हो,
जय–जय कार से मन सबका बहलाते हो।

उन शहीदी परिवारों से पूछों, चमन कैसे सींचा था,
शहादत देकर भी, चेहरे पर तनाव न, दीखा था।
वह शहादत पुकार रही आज, लाज कौन बचायेगा,
राखी, मांग और सूनी गोद का, कर्ज कौन चुकायेगा।

तुम्हारी कृतघ्नता के गीत, भविष्य चीख–चीख कर सुनाएगा,
सोते रहे गर यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।4।।

डाल काट रहे वही, जिस पर तुम खुद बैठे हो,
अर्तनाद करती माता, कैसे उसके बेटे हो।
कर्तव्य विमुख बन गए क्यों, उष्णता रक्त में क्यों नहीं आती,
लुटते रहे खुद अपने हाथों, इतिहास इसका है साक्षी।
किन्तु हताश न हो, निराश न हो, वक्त पुरूषार्थ से फिर बदल जायेगा,
सूखे इस उपवन में फिर से, वही बहार लायेगा।
गर भूल गए कर्तव्यों को, तो भविष्य दुर्गम हो जाएगा।
सोते रहे यूंही तो, गुलिश्ता फिर उजड़ जायेगा।।5।।

रचना
"प्रकाश आर्य"

महर्षि दयानन्द के जीवन से.....

स्वराज्य एवं स्वतन्त्रता के प्रेरक

सन् 1873 में कोलकाता यात्रा पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से उस समय के वायसराय लॉर्ड नार्थ ब्रुक बहुत ही प्रभावित हुए। स्वामी जी से भेंट में उन्होंने कहा कि – "आप हमारे राज्य में पूरी स्वतन्त्रता से प्रचार कर पाते हैं या नहीं ?" स्वामी जी ने कहा – हॉ मुझे मतमतान्तरों के विवेचन में कोई रूकावट नहीं है मुझे पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त है। लार्ड नार्थ ब्रुक ने कहा फिर आपको अंग्रेजी राज्य की स्थिरता के लिये प्रातः सायं ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। स्वामीजी ने बड़ी निडरता से कहा – "वायसराय जी मैं अपनी उपासना में अंग्रेजी राज्य की स्थिरता के बजाय प्रातः सायं उस ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह देश शीघ्र अतिशीघ्र विदेशियों की दासता से मुक्ति पा जाये।" कर्नल नार्थ ब्रुक स्वामीजी के उत्तर से हक्का बक्का रह गये और भारतीय कार्यालय लन्दन को उन्होने लिखा – "इस विद्रोही फकीर पर सतर्क दृष्टि रखने की आवश्यकता है।" स्वामीजी जहॉ कहॉ प्रचार हेतु जाते वहॉ राष्ट्र को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के संबंध में उपदेश देते –"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है...... प्रजा पर माता–पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है" (सत्यार्थ प्रकाश) लोकमान्य तिलक और महात्मा गॉधी से अर्धशतक पूर्व स्वामी दयानन्द ने अंग्रेजी सत्ता के चरमोत्कर्ष काल में भारतवासियों को स्वराज्य शब्द देकर स्वतन्त्रता संग्राम के वटवृक्ष का बीजारोपण किया था।

विदेशी मतों का खण्डन

स्वामी दयानन्द से पूर्व अनेक विदेशी मतमतान्तर भारतवर्ष में पूरी तरह से जड़ जमा चुके थे। 12 वर्ष से इस्लाम और चार सौ वर्षो से ईसाई मत भारत में अनियत्रित रूप से अपने मजहबों का प्रचार–प्रसार कर रहे थे। ये केवल अपने मजहब की अच्छाइयों का ही प्रचार–प्रसार नहीं कर रहे थे प्रत्युत यहॉ की परम्पराओं एवं मान्यताओं का द्वेषमूलक खण्डन भी कर रहे थे। स्वामी दयानन्द ने जहॉ सर्वप्रथम भारतीय समाज की हितकारी मान्यताओं को भी प्रस्थापित किया। उन्होंने सर्वप्रथम अपने घर को स्वच्छ करने का अभियान चलाया, वहीं विदेशी मतमतान्तरों की बुराइयों को दुनिया के सामने प्रकट किया। उन्होंने भगवान राम और योगेश्वर श्रीकृष्ण के चरित्र पर कीचड़ उछालने वाले मौलवी, पादरियों को अपने धर्म पर अन्तर्मुख होकर सोचने के लिए कहा। अब तक भारतीय सम्प्रदायों पर एकतरफा वार किये जाते थे, लेकिन स्वामीजी ने एक नई सोच हिन्दुओं को दी जिससे हिन्दू बुद्धिजीवी अन्य

मजहबों के अवैज्ञानिक और तर्कहीन मान्यताओं की भी समीक्षा करने लगे। स्वामीजी के आने से पूर्व विदेशी धर्मगुरू हिन्दू धर्म की आलोचना तो कर सकते थे, लेकिन हिन्दू विद्वान इस्लाम और ईसाइयत की बुराईयों का जिक्र भी नहीं कर सकते थे। इसी सन्दर्भ में यह भी एक सच्चाई थी कि कोई भी मुल्ला, मौलवी, पादरी, हिन्दुओं को धर्मान्तरित कर मुस्लिम अथवा क्रिश्चन बना सकता था, लेकिन किसी को भी यह अधिकार नहीं था कि क्रिश्चनों या मुस्लिम को कोई हिन्दू बना सके। इस प्रकार आठ सौ सालों से धर्म परिवर्तन का एकमार्गी कार्यक्रम क्रिश्चनों और मुस्लिमों द्वारा बेखौफ चलाया जा रहा था। स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले इस कुटिल चक्र को तोड़ा और भारतीयों को भी विदेशी मतान्तरितों को फिर से स्वधर्म में लाने का आदेश दिया।

स्त्री शूद्रों को वेदाधिकार

मध्य काल में स्त्रियों की हालत घर में बन्द हुए एक कैदी की भाँति थी। उन्हें न शिक्षा का अधिकार था न सामाजिक व्यवहार का। स्वामीजी स्त्रियों को इस संकुचित दायरे से बाहर निकालना चाहते थे। उनका स्पष्ट मत था कि जब वैदिक काल में नारियाँ पढ़ लिखकर विदुषी बन सकती थीं तो इस आधुनिक काल में वे क्यों शिक्षित नहीं हो सकती ? उनके लिए हर सत्य का आधार वेद और वैदिक काल था। उनका मत था कि स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार ईश्वर प्रदत्त है। वे वेद का प्रमाण देकर कहते हैं – "जैसे लड़के ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके विदुषी युवती से अपने अनुकूल प्रिय सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं, वैसे (कन्या) कुमारी ब्रह्मचर्य सेवन से वेदादि शास्त्रों को पढ़ पूर्ण विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त युवती होके पूर्ण अवस्था में अपने सदृश प्रिय विद्वान और पूर्ण युवावस्था युक्त पुरूष को प्राप्त होवे।" (सत्यार्थ प्रकाश) स्वामी दयानन्द धर्म और सामाजिक व्यवहार के विषय में किसी से भेद नहीं करना चाहते थे। उच्च और निम्न वर्ण उस व्यक्ति के बुद्धयांक और योग्यता पर निर्भय करता है, कोई भी व्यवस्था ऐसी नहीं होनी चाहिए, जो जन्म के आधार पर श्रेष्ठ और कनिष्ठ ठहराती हो। अतः उन्होंने पाँच हजार साल से चली आ रही जन्मना वर्णव्यवस्था की मानवीयता के आधार पर ध्वस्त कर दिया। वे कहते हैं –"जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि को पढ़ाने सुनाने का नहीं होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता ?" अन्य जगह स्वामीजी कहते हैं – "देखो ! परमेश्वर स्वयं कहता है कि..... अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है, अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़, पढ़ा और सुन सुनाकर विज्ञान को बढ़ाके अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हो।" (सत्यार्थप्रकाश) अतः मध्यकाल और उससे पूर्व चली आ रही सामाजिक ऊँच–नीचता, भेदभाव और गैरबराबरी को स्वामी दयानन्द ने धर्म और परम्परा से अलग कर एक स्वस्थ समाज की पुर्नरचना की।

समृद्धि का मूल मन्त्र - एकता और पुरुषार्थ

एक व्यक्ति था बहुत निर्धन। परिवार बहुत बड़ा था। खाने को कुछ नहीं। दशा बहुत खराब हुई तो परिवार को लेकर ग्राम से चल पड़ा कि कहीं दूसरे नगर में जाएं। परिश्रम करके पेट पालेगें। ग्राम से चले। चलते गये। रात्रि हुई तो एक वृक्ष के नीचे उन्होंने डेरा डाल दिया। पिता ने अपने बेटे से कहा – बेटा ! जाओ, पास के वन से कुछ लकड़ियां ले आओ, ताकि आग तो जलाएं।

बेटा चलने लगा तो छोटा भाई बोला – इन्हें मत भेजो, मैं जाकर लाता हूं।

उससे छोटे ने कहा – नहीं, पिताजी, मैं लाता हूं।

पिता ने कहा – अच्छा बेटो, सभी कार्य करो। एक व्यक्ति लकड़ी ले आए, दूसरा पानी, तीसरा पत्थर लाकर चूल्हा बना ले।

सब मिलकर कार्य करने लगे। थोड़ी देर में चूल्हा बन गया। लकड़ियां आ गई, आग जली, पानी भी आ गया।

उस वृक्ष पर एक पक्षी रहता था। उसने जब यह सब कुछ देखा, तो हंसकर कहा – अरे, भोले लोगों, सब कुछ तुम ले आए, परन्तु खाने को कुछ है नहीं। पकाओगे क्या ? खाओगे क्या ?

समझने के लिए यह कथा बनाई गई है, वैसे पक्षी बोलते तो हैं नहीं। बड़े लड़के ने ऊपर देखा। पक्षी को देखते हुए कहा – तुझे खाएंगे हम। ठहर अभी तुझे पकड़ता हूं।

पक्षी ने भयभीत होकर कहा – नहीं भाई, ऐसा न करो। मुझे न खाओ। मैं तुम्हें एक स्थान दिखाता हूं, जहां तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा।

उन लोगों ने पक्षी के साथ थोड़ी दूर जाकर स्थान देखा। पक्षी ने कहा – इस स्थान को खोदो।

उन्होंने खोदा तो देखा, नीचे एक बहुत बड़ा कोष है, सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात, सभी कुछ इसमें है। उस दौलत को उन्होंने निकाल लियाा। अब परिश्रम की आवश्यकता नहीं थी, इसलिए दूसरे दिन ग्राम में वापस आ गए। धन बहुत था। आनन्द से रहने लगे। उनके पड़ोसी ने यह दशा देखी तो पूछा – अरे ! तुम यह एक ही रात में इतने सम्पत्तिशाली कैसे हो गए ?

इन लोगों ने पड़ोसी को अपनी सारी कथा सुना दी। उस वृक्ष की बात भी बता दी, पक्षी की बात भी। पड़ोसी ने सोचा – यह तो बहुत अच्छा उपाय है। वह भी अपने सारे परिवार को लेकर ग्राम से चल पड़ा। रात्रि में उस वृक्ष के समीप पहुंचा। वहां डेरा डाल दिया, तो उसने अपने बड़े पुत्र से कहा – पुत्र, जाओ थोड़ी लकड़ियां ले आओ।

पुत्र ने क्रोध से कहा – छोटे को क्यों नहीं कहते ? उसकी क्या टांगें टूट गई हैं ? पिता ने छोटे को कहा। वह बोला – मैं तो थक गया हूं बहुत। मुझसे चला नहीं जाता। दूसरों को क्यों नहीं कहते ? इनकी टांगों में पानी तो नहीं पड़ा।

पिता ने दूसरों से कहा, परन्तु कोई नहीं गया। तंग आकर उसकी पत्नि ने कहा – अच्छा, कोई नहीं जाता तो मैं ही जाती हूं।

पति ने कहा – अरे, तू कहां जायेगी। बैठी रह। कहीं हाथ पांव तोड़कर आ जायेगी।

कोई भी नहीं गया। लकड़ियां नहीं, पानी नहीं, चूल्हा नहीं, कुछ भी नहीं आया वहां। वृक्ष पर बैठा वही पक्षी इस तमाशे को देखता रहा। वह बोला – अरे, तुम विचित्र लोग हो ! लकड़ी नहीं, पानी नहीं, खाने को समान नही तब क्या भूखे रहोगे ? खाओगे क्या ?

एक लड़के ने तुरन्त कहा – तुझे खाएंगें।

पक्षी ने हंसते हुए कहा – आराम से बैठे रहो। मुझे खाने वाले चले गए। तुम आपस में ही फूटे बैठे हो। तुमसे कुछ नहीं होगा। यह कहा और उड़के चला गया वह कहीं दूर किसी वृक्ष पर।

यह है एकता और फूट का परिणाम। जो लोग मिलकर नहीं रहते, उन्हें असफलता के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता।

अनुव्रतः पितुःपुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवान् अथर्व : 3 / 30 / 2

पुत्र, पिता का अनुव्रती हो, मां के मन को अच्छा लगने वाला हो, उसके अनुकूल हो, पति के लिए स्त्री मधुर भा णी हो, (विवाह में मधुपर्क) शान्तिदायी हो। भाई का भाई से बहन का बहन से अपार प्रेम हो त्याग व स्नेह की भावना से दोनों एक हो यह प्रयास हमारा होना चाहिए (राम–भरत) तभी हमारे पारिवारिक धर्म का पालन होगा।

ये कैसी हिन्दू की विशेषता

यह वाक्य सुनने में आता है तथा कई दीवालों पर लिखा रहता है कि "अनेकता में एकता यह हैं हिन्दू की विशेषता"।

यह कैसी विशेषता है जो राम कृष्ण के मानने वाले दलित भाई हैं उन्हें ही अपने कुओं पर पानी भरने नहीं देते। अपने शमशानों में मुर्दे जलाने नहीं देते। यदि कोई दलित का लड़का परीक्षा देने जाने से पहले मन्दिर में मूर्ति के दर्शन करने जाता है जिसे वह भगवान मानता है तो उसे पकड़ के पीटते हैं यह हिन्दू की विशेषता है क्या?

कोई दलित के पुत्र या पुत्री की घोड़े पर बिन्दोली निकलती है तो उसे अपने मोहल्ले से निकलने नहीं देते। लोग लट्ठ व हथियार लेकर झगड़ा करने को तैयार हो जाते हैं इस प्रकार की घटनाऐं जावरा तहसील, मन्दसौर जिले, आगर जिले के सुखनेर में ही घटी हैं। केवल मध्य प्रदेश में ही नहीं गुजरात के अहमदाबाद के पास दलित बच्चियों की बिन्दोली न निकलने देने के लिए सवर्णों की महिलाओं द्वारा रास्ते में भजन करना शुरू कर रास्ता रोक दिया।

क्या यह हिन्दू की एकता की विशेषता है ? यदि हमारे दलित भाईयों के साथ यही व्यवहार होता रहा तो दूसरे मजहब वाले व राजनीति के स्वार्थी इसका लाभ उठायेगें। खेद का विषय तो यह है कि अपने आप को हिन्दू हितैषी कहने वाले संगठन कोई एक शब्द भी नहीं बोलता। ये महामण्डलेश्वर जो धर्म के शीर्षस्थ हैं। ऐसे लोगों को नहीं समझाते कि ये भी उसी परमात्मा की कृति हैं जिसने उन्हें बनाया।

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजन उपदेशक श्री सुखलाल आर्य मुसाफिर की ये पंक्तियाँ याद आ गई।

लो गले से अछूतों को छाती लगा हिन्दुओं,
वर्ना ये लाल गैरों के घर जायेगें।
आप माने या ना माने खुशी आपकी,
हम मुसाफिर हैं कल अपने घर जायेगें।

– भगवानदास अग्रवाल, रतलाम

शपथ

■ एक समारोह में देश सुरक्षा व गोपनीयता की,
जैसे ही मन्त्री ने शपथ खाई
प्रबुद्ध श्रोताओं के बीच से, आवाज ये आई।
बस–बस रहने दो, शपथ को और बदनाम न करो,
अपनी करनी से, कुछ तो डरो।
पहलीबार भी इसी तरह शपथ खाई थी,
जनता को अपनी ईमानदारी दिखाई थी।
पर शपथ, मंच तक ही सीमित रह गई,
सारी बातें हवा में ही बह गई।

■ अब तो शपथ भी डरने लगी है तुम जैसों से,
जिनका ईमान, धरम, रिश्ता सबकुछ है पैसों से।

■ अब शपथ के भरम में और हमें मूर्ख न बनाओ,
चरित्र में उतार करके ही विश्वास दिलाओ।

■ शपथ के बाद, गिरे चरित्र की देखी पराकाष्ठा,
इसीलिए शपथ पर नहीं रही कोई आस्था।

■ शपथ में विश्वास छिपा है,
पर तुममें तो विष का वास दिखा है।
लूट लिया तुमने, ऐसे ही नाटक कर देश को,
रावण बने हो धर राम के भेष को।

■ बर्बादी कर दी बाग की, बनकर माली।
इतना बदनाम हो गए, कि नेता नाम लगता है गाली।।

■ सारे अवगुण, दुराचार और भ्रष्टाचार,
ये सब शपथ के बाद से ही पनपाते हो।
लूट रहे देश, पर रक्षक कहलाते हो,

■ इसलिए जब–जब कोई नेता शपथ खाता है,
उसके इस पाखण्ड से दिल घबराता है।

■ क्योंकि गिरावट की शुरूआत, ऐसे ही समारोह से होती है।
ताली बजाती जो जनता, फिर बाद में वही रोती है।

– **प्रकाश आर्य, महू**

वेदों की दृष्टि में धर्म का स्वरुप

हमने ''धर्म'' और 'संस्कृति' शब्दों के मूल अर्थ को नष्ट कर दिया है। हमने सब मतों, मजहबों, सम्प्रदायों, पन्थों, मान्यताओं या दृष्टिकोणों को धर्म मानना शुरू कर दिया है। जबकि धर्म तो केवल कोई एक ही हो सकता है और वह भी वही हो सकता है जो सभी को स्वीकार करने योग्य हो, इसलिए वेद में कहा गया है –

सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा।

(यजुर्वेद 7 / 14)

वह प्रथम संस्कृति ही विश्व के समस्त मानवों के लिए वरणीय है।

तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

(ऋग्वेद 10 / 90 / 16)

धर्म के वे अंग–सत्य, संयम, सदाचार, न्याय, दया, क्षमा, परोपकार व अहिंसा आदि शाखा–प्रशाखा के रूप में सर्वप्रथम वेदों में ही वर्णित हैं। संस्कृत साहित्य में विलोम शब्द के रूप में दो शब्दों की जोड़ी सुप्रसिद्ध है – नूतन व पुरातन। कोई मत या मजहब किसी अन्य मत या मजहब की अपेक्षा नूतन होता है तो कोई पुरातन। वैदिक धर्म सनातन है।

किन्तु सृष्टि के प्रारम्भ से निरन्तर प्रवाहित होती आ रही वैदिक धर्म की यह अजस्त्र धारा गंगा की तरह गंगोत्री से निकलकर आज तक सर्वजनहिताय तथा सर्वजनसुखाय है। यह वैदिक धर्म सार्वजनीन, सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं अजातशत्रु है जो निर्विकार एवं निर्दोष होने के कारण समस्त विश्व का सर्वथा शोधन करता है। यही धर्म विश्ववरणीया संस्कृति भी कहलाती है। जब धर्म वैदिक न रहकर अन्य किसी मतपरक विशेषणों से जुड़ने लगता है तो उस समय मौलिक धर्म की उत्कृष्टता अपने आप समाप्त होने लगती है तथा वह तथाकथित धर्म, संकीर्ण, भाव वाला होकर अपने अनुयायियों को सच्ची मानवता से दूर भी करता है।

धर्म निरपेक्षता की अनर्गल व्याख्या ने ही कुकुरमुत्तों की तरह जगह जगह पर उग आए आधुनिक समस्त मत–सम्प्रदायों, पन्थों एवं मजहबों को उदारता एवं समझौतावाद के कारण धर्म और संस्कृति का जामा पहना दिया है। जिसका परिणाम वर्तमान में हम देख रहे हैं–सर्वत्र धार्मिक विद्वेष, साम्प्रदायिक कट्टरता, मजहबी उग्रवाद, अधिक स्वायत्तता की मांगें व युद्ध विभीषिका। इस प्रकार का तथाकथित धर्म स्वयं को

उत्कृष्ट एवं अन्य को गर्हित, हेय व अधम मानता है। ऐसी बात नहीं है कि वैदिक धर्म से पृथक अपनी सत्ता रखने वाले अन्य मतों व मजहबों में कोई अच्छी बात है ही नहीं अपितु इन सभी मतों में जो करूणा, ममता, उदारता, सहानुभूति, सदाचार, अहिंसा आदि गुण हैं वे प्रशंसनीय हैं। समाजों व राष्ट्रों में देश, काल तथा व्यक्ति की प्रवृत्ति के अनुसार खान–पान, रहन–सहन, लोकाचार व पूजा–पद्धतियों में भिन्नता होना स्वाभाविक है, परन्तु उन से धर्म की भिन्नता कदापि नहीं हो सकती।

धर्म सब का एक ही होता है। अध्यात्म से ओत–प्रोत जीवन सत्य, धैर्य, क्षमा, इन्द्रिय–नियन्त्रण, स्वाध्याय, दानकर्ता, परमार्थ, यज्ञमयता, उदारता, पक्षपातहीन, न्याय, अप्रमाद, कर्तव्यपरायणता, उदात्तता, तपस्या, साधना, सन्तोष, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह आदि गुण धर्म के वे शाश्वत अंग हैं जो इन्सान को दानवता से बचाते हुए मानव बनाए रखते हैं। इन्हीं धार्मिक गुणों से एक स्वस्थ समाज व विशाल राष्ट्र की स्थापना हो पाती है।

वैदिक ऋचाएं धर्म को ध्रुव विशेषण से जोड़कर उस की अक्षरता को दर्शाते हुए निश्चित सिद्धान्तों व आचरण के नियमौं की ओर संकेत करती हैं –

मित्रावरूणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्टयै।

(यजु. 2/3)

वस्तुतः धर्म एवं संस्कृति आदिकाल से चले आ रहे वे शाश्वत मानवीय कर्तव्य हैं जो अनिवार्य रूप से पालन किये जाते हैं। इस धरा के महर्षियों की अमरवाणी केवल इसी लोककल्याण कारिणी धर्म–ध्वनि का ही उच्चारण करती रही है – धर्मादर्थश्च कामश्च अर्थ और काम की प्राप्ति धर्मपूर्वक ही करनी चाहिए।

उपनिषत् के ऋषि ने भी धर्म की सार्थकता को लोकोन्नति में ही देखा है। उसने कहा – त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञो अध्ययनं दानम्। (छान्दोग्य उपनिषद् 2/23/1) यज्ञ, अध्ययन एवं दान के माध्यम से उस ने धर्म का व्याख्यान करने का प्रयास किया है। यज्ञ धर्म का पहला अंग है।

सभी श्रेष्ठ कर्म यज्ञ कहलाते हैं अतः कोई भी अच्छा कार्य करने वाला व्यक्ति सच्चा धार्मिक होता है। अध्ययन जीवन को उत्थान की ओर ले जाता है। इसलिए स्वाध्यायप्रेमी व्यक्ति भी धर्म का पालन माना गया है। दान धर्म का वह पड़ाव है जिस से व्यक्ति मानवता से देवत्व की ओर कदम रखता है।

– डॉ. विकम कुमार विवेकी

वेद वाणी

पाप से दूर हों

ओ3म् परोपे हि मनस्पाप किसशस्तानि शंससि।
परेहि न त्वा कामये वृक्षां वनानि संचर गृहेषु गोषु में मनः।।

– अर्थवेद

हे (मनस्पाप) मन के पाप तू (परा उप एहि) दूर भाग जा हे पापी मन। (किम्) क्यो (अशस्तानि) निन्दित बातों को (शंससि) सोचता है। (परेहि) हट जा। हे मन के पाप (त्वा) तुझको (न कामये) मै नहीं चाहता। (वृक्षान्+वनानि) वृक्षों और वनों में अर्थात निर्जन स्थानों में (संचर) विचरो (में) मेरा (मनः) मन तो (गृहेषु) मेरे शरीर रूप घर की सफाई में विकारों से दूर करने में (गोषु) इन्द्रियों को सही दिशा की ओर उन्मुख करने में तथा वेद पठन पाठन में गौ संरक्षक व गौ संवर्द्धन में लगा है।

भावार्थ – मन मानव जीवन का आधार है, योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं – "मन एव मनुस्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो" मन ही मनुष्य के बन्धन का कारण है, मन ही मनुष्य के लिए मोक्ष का कारण है। मन का कपि बन्दर कहा गया है बहुत उछल कूद मचाता है मन के संकल्प विकल्प होते रहते है – इसमें उलझकर मनुष्य आकुल व्याकुल हो जाता है मन के विकार काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर, के वशीभूत होकर मनुष्य शनैः शनैः पतन के गर्त में जाने लगता है मन एक सीढी है जिससे ऊपर भी जा सकते है और उपर से नीचे भी आ सकते है। किन्तु साधना में रत साधक मन के पापों को कठोर शब्दों में कहता है।

मेरा तुझसे अब कोई सम्बन्ध नहीं है मैं तुझे नहीं चाहता। मैं अब समझ गया हूं – ये मन के विकार नरक के पथ है। मै तो अब दृढ संकल्प के साथ प्रभू का स्मरण करते हुए संयम विवेक की पतवारों से जीवन नौका खे रहा हूँ – योगासन प्राणायमादि से जीवन को प्रेय मार्ग से श्रेय मार्ग की ओर ले जा रहा हूँ। मै तो अपने शरीर की अर्न्तमन की सफाई में लगा हुआ हूँ। मै गौ अर्थात इन्द्रियों को सात्वीक और बलशाली बना रहा हूँ – वेदवाणी का जीवन में पठन पाठन और उसे जीवन में उतार रहा हूँ। गौ सर्वर्द्धन और गौ संरक्षण में जीवन आर्पित किए हुए हूँ। मन से बुरे विचारों को दूर कर रहा हूँ। हे मन के पाप भाग जा दूर हो जा। इस प्रकार की दृढ़ता आने से मन के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति हो और बन्धनों से मुक्ति हो सकती है।

जन विश्वास का महत्व

सुप्रसिद्ध चीनी दार्शनिक कनफ्यूशियन से एक शिष्य ने प्रश्न किया – शासन प्रभावशाली किस प्रकार बनाया जा सकता है ?

दार्शनिक ने उत्तर दिया – पर्याप्त अन्न, अस्त्र–शस्त्र, जनता का विश्वास प्राप्त करके। शिष्य ने पुनः प्रश्न किया – यदि तीनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तो किसे छोड़े ?

अस्त्र–शस्त्र को दार्शनिक ने कहा। और यदि शेष दोनों में से किसी एक का त्याग करना पड़े तब।

कनफ्यूशियन गंभीर हो गए, फिर बोले, ऐसी स्थिति में भोजन का त्याग करें। परन्तु भोजन के अभाव में कुछ लोग मरेगें।

शिष्य ने पूछा – यदि जनता का विश्वास त्याग दें तो कैसा रहे ?

दार्शनिक ने एक क्षण सोचे बिना उत्तर दिया, ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जाएगा। कोई भी शासन, भोजन और अस्त्र–शस्त्र के अभाव में चल सकता है कुछ दिन, परन्तु जन विश्वास के समाप्त होने पर एक पल भी शासन नहीं टिक सकता।

इसलिए जनविश्वास सर्वोपरि है, जनविश्वास शासन की आत्मा है।

(ज्योतिपथ – सत्पसद आर्य)

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष—बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

"वेद सुधा"

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

यजुर्वेद अध्याय 16 में 'रूद्र' शब्द को विस्तारपूर्वक समझाया गया है। 'रूद्रदेव' के विभिन्न रूपों का वर्णन है उन्हीं में से यहां कुछ अंश प्रस्तुत किया जाता है। रूद्र अनेक हैं यह द्यौ अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी पर विद्यमान हैं यजुर्वेद का यह अध्याय रूद्र अध्याय कहलाता है।

"असंख्याता सहस्त्राणि ये रूद्राऽधि भूम्याम्।" यजु. 16/54

"अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽधि" यजु. 16/55

इन रूद्रो के दो रूप हैं – 1. इनका जो कल्याणकारी रूप है, वह शिव कहलाता है। 2. और यही विनाशकारी रूप में रूद्र बन जाते हैं। इस त्रिगुणात्मक प्रकृति से उत्पन्न अर्थात इस सृष्टि का प्रत्येक पदार्थ शिव और रूद्र है। सृष्टि रचयिता ईश्वर के भी यह नाम हैं किन्तु प्राकृतिक पदार्थों के भी है। जब मनुष्य सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ को ज्ञानपूर्वक समुचित रूप से उपयोग में लेता है तो वह रूप शिव हो जाता है, उसके लिए कल्याणकारी हो जाता है। किन्तु जब मनुष्य अज्ञान, अविद्या में फंसकर आसक्ति पूर्वक अनुचित अर्थात दुरूपयोग करता है तब वही पदार्थ रूद्र रूप से उसके लिए विनाशकारी हो जाता है।

ओ3म् नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

– यजुर्वेद 19/1

अर्थ – हे शत्रुओं को रूलाने वाले, रोगों को नष्ट करने वाले, दुर्गुणों, पापवृत्तियों को भस्म करने वाले प्रभो। आपको हमारा नमस्कार हो।

जैसे – पहले कहा है कि रूद्र असंख्य हैं ईश्वर, राजा, वायु, औषधि, वृक्ष, वैद्य, ऋषि, अर्थात् वैज्ञानिक आदि मन्त्र में असंख्यों पदार्थों का नाम रूद्र बताया है।

यहां पर केवल हम इस सर्वनियन्ता सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही ग्रहण करते हैं जब हम कल्याण पथ पर चलते हुए आत्म चिन्तन करते हैं, प्रभु का ध्यान करते हैं। उस समय हमारे अन्दर जो उत्साह होता है, जो साहस की अनुभूति होती है तथा जो शक्ति मिलती है। वह ईश्वर की 'शिव' रूप शक्ति है उसी के माध्यम से मनुष्य मोक्ष मार्ग में

गमन करता हुआ यात्रा पूरी कर पाता है अर्थात् शिवलोक (मुक्ति) में पहुंच जाता है।

और जब व्यक्ति रोग, शोक व्यसनों तथा वासना, काम, क्रोध आदि शत्रुओं के बीच घिर जाता है, जब मुसीबतों के समुद्र में डूबने लगता है। ऐसी स्थिति में सगे संबंधी, रिश्तेदार सभी मित्र आदि जब मुंह मोड़ लेते हैं तब व्यक्ति कातर दृष्टि से प्रभु की ओर निहारता है, ध्यान करता है। इस समय जो वैराग्य होता है विषयों के प्रति अनासक्ति हो जाती है, व्यसनों, दुर्गुणों का नाश हो जाता है। यह ईश्वरीय 'रूद्र' शक्ति के माध्यम से होता है और रूद्र शक्ति की सहायता से मनुष्य सब प्रकार की पाप वृत्तियों पर विजय पाकर विजेता बन जाता है। अपनी दुर्बलताओं का नाश करके आत्मबल प्राप्त कर लेता है। तब उस प्रभु 'रूद्र' की सहायता और सुरक्षा में चक्रवर्ती सम्राट के समान व्यक्ति स्वाभिमान से प्रकाशमान हो जाता है। कोई भी आसुरी शक्ति तिरछी नजर से देखने का साहस नहीं कर सकती। इसलिए हम सब प्रभु का ही आश्रय लेवें।

विदाई

शिक्षा प्राप्त करके तपस्वी दयानन्द ने गुरू दण्डीजी को लौंगों से भरी एक थाली भेंट की। पर दण्डी जी बोले, वत्स ! संसार में अज्ञान फैला हुआ है। देश मे वेद विद्या लुप्त हो रही है। इस बढ़ते हुए अन्धकार को चीरकर सत्य धर्म का, वेद का प्रकाश करो, यही हमारी गुरू दक्षिणा है।

गुरू से यह आशीर्वाद और नई प्रेरणा ले स्वामी दयानन्द विदा हुए। देश के कोने–कोने में घूमकर उन्होंने अज्ञान के घोर अन्धकार को दूर करने में अपने प्राणों का जिस प्रकार होम किया, संसार उसे भली भांति जानता है। ऐसा था दण्डीजी का प्रशिक्षण।

अन्त में सन् 1868 में 71 वर्ष की आयु में दण्डी स्वामी विरजानन्द महाराज ने इस भौतिक देह को छोड़ दिया। उनकी मृत्यु पर महर्षि दयानन्द ने आर्त स्वर में कहा था – आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।

यह है, दण्डीजी का आदर्श चरित्र, जिनका लोहा भारत ही नहीं, सारा संसार माना है।

स्वर्ग सा समय यह अपना न गवाओं

स्वर्ण सा समय यह अपना न गंवाओं
प्रभु ध्यान लगाओ, अब तो जरा होश में आओं।
देखो जवानी के बाद ढलती सांझ हैं।
फिर तूफानी पथ है सघन उसमें राझ हैं।
अपना पथ अभी से तुम प्रशस्त बनाओं।
प्रभु ध्यान लगाओ ....
चन्द दीन का मेला है, सत्य यह बात हैं।
चार दिन की चांदनी और फिर अंधेरी रात हैं।
बात यह अपने दिल से न भुलाओं।
प्रभु ध्यान लगाओ ....
सोंच जरा दिल में तू अपने इन्सान रे।
माया के मद में क्यों भूला भगवान रे।
अब इस झूले में न खुद को झुलाओं।
प्रभु ध्यान लगाओ ....
स्वांस से है जिन्दगी, हरी तो वही मौत है।
न ज्ञात है किसी को बुझेगी कब ज्योत हैं।
अतः एक सांस भी न व्यर्थ गंवाओं।
प्रभु ध्यान लगाओ ....
जो गया समय न कभी हाथ वह आता।
पीछे से अनल क्यो तू है पछताता।।
बाकि जो समय बचा उसे न यो ही बिताओं।
प्रभु ध्यान लगाओ ....

रचना श्री काशीराम अनल
कानड

समाचार ...

आर्य समाज पिपलानी के वार्षिक सम्पन्न

प्रधान श्री अतुल वर्मा, उपप्रधान श्री विष्णु कुमार कुलश्रेष्ठ, मंत्री श्री विवके वाधवा, उपमंत्री श्री रंजना द्विवेदी, कोषाध्यक्ष श्री फूलचन्द गर्ग, पुस्तकाध्यक्ष श्री बाबूदास वैष्णव, आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री विनय तनेजा।

अन्तरंग सदस्य – श्री दुलिचन्द गर्ग, श्री तिलकराज गुलियानी, श्री जगमोहन श्रीवास्तव, श्री सुभाष मनचन्दा

प्रतिष्ठित – श्री महेन्द्र कुमार माथुर, श्री धर्मवीर बाधवा,

अंकेक्षक मनोज मीना गर्ग एसोसिएट

इन्दौर संभाग के ग्राम धानी में नवीन आर्य समाज की स्थापना

इन्दौर संभाग के ग्राम धानी (ईसाई प्रभावित क्षेत्र) में आर्य समाज की स्थापना की गई। आर्य समाज के 18 सदस्यों ने सदस्यता ग्रहण की। संभागीय उपप्रधान श्री दक्षदेव गौड़ उपमंत्री श्री प्रताप सिंह आर्य एवं सभा प्रधान की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संभागीय सम्मेलन – इन्दौर संभाग की आर्य समाज दयानन्द गंज इन्दौर में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज विदिशा का 105 वां वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज विदिशा का 105 वां वार्षिक सम्मेलन 2 से 5 जून 23 में सम्पन्न। इस अवसर पर विद्वान आचार्य सोमदेव जी भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ को आमंत्रित किया गया। तीन दिवसीय इस आयोजन में बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। इस अवसर पर सभा प्रधान श्री प्रकाश जी आर्य, सभा मंत्री श्री अतुल जी वर्मा इन्दौर से उपप्रधान श्री दक्षदेव जी गौड़, श्री वेदप्रकाश जी शर्मा भोपाल से पधारें।

दिनेश वाजपेयी

समाचार ...

महर्षि दयानंद आर्ष कन्या गुरुकुल मोहन बड़ोदिया

कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया के प्रति जन सामान्य का लगाव। इस वर्ष मध्य प्रदेश शिक्षा मंडल के पाठ्यक्रम के अनुसार आयोजित 8 वीं बोर्ड की परीक्षा में गुरूकुल को शत प्रतिशत सफलता मिली। इस वर्ष अधिकतम 10 नए प्रवेश देने की योजना थी। किन्तु पूरे प्रदेश के भिन्न भिन्न क्षेत्रों से और प्रदेश के बाहर अन्य प्रदेशों से कन्याओं का प्रवेश हो रहा हैं। यह नवीन प्रवेश की संख्या 25 तक करना पड़ी। इस हेतु 20 छात्राओं के आवास का एक कक्ष और बनाना पड़ा। एक और बड़ा हाल 80x36 का निर्माणधीन हैं।

विशेष – **इस सत्र के लिए अब प्रवेश प्रतिबंधित कर दिए गए हैं। कृपया इस सत्र के लिए अब प्रवेश हेतु प्रयास ना करें**। किन्तु आगामी सत्र हेतु अभी से नामांकन किया जा रहा हैं।

निवेदन – गुरूकुल सनातन धर्म रक्षा और विस्तार के लिए गुरूकुल ही एक मात्र उपाय हैं। प्रत्येक वैदिक धर्मी से निवेदन है, कृपया गुरूकुलीन व्यवस्था के लिए अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें। यह गुरूकुल भी आप सभी के सहयोग से संचालित होकर 13 की संख्या से 60 संख्या तक पहुंचा हैं। कृपया अपना सहयोग प्रदान कर गुरूकुल व्यवस्था में सहयोगी बनें।

क्रियात्मक योग साधना शिविर

ध्यान कुंज आश्रम नर्मदा नदी के तट पर ओंकारेश्वर में दिनांक 05 से 09 अक्टूबर 2023 तक आयोजित किया जा रहा हैं। यह शिविर प्रसिद्ध विद्वान स्वामी विवेकानन्द जी के सानिध्य में सम्पन्न होगा। शिविरार्थीयों की आवास व भोजन प्रातः राश की सुन्दर व्यवस्था की गई हैं। ईश्वर, आत्मशान्ती, जीवनोन्नति, योग, ध्यान जैसे अनेक विषयों पर प्रशीक्षण दिया जावेगा। इच्छुक शिविरार्थी अपनी सहयोग राशि न्यूनतम 6500/– ध्यान कुंज आश्रम ओंकारेश्वर पर निम्नानुसार माध्यम से प्रेषित कर अपना स्थान यथाशीध्र नियत करवा लेवें।

समाचार ...

उज्जैन संभाग के ग्रामीण क्षेत्रों में महर्षि दयानंद जी की 200 वी जयन्ती उपलक्ष में वेद प्रचार

आर्य समाज चापड़ा में तीन दिवसीय वेद प्रचार यज्ञ, भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया जिसमें मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के उपदेशक श्री आचार्य विश्वामित्र जी, भजनोपदेशक श्री दिलीप जी आर्य, श्री हरिओम जी सरल द्वारा यज्ञ एवं सुन्दर भजन प्रवचन प्रस्तुत किये गए जिसमें प्रातः 8 बजे से यज्ञ पश्चात प्रवचन हुए यज्ञ में 25 जोड़ो भाग लिया इस प्रचार में आर्य समाज चापडा के प्रधान श्री अम्बाराम जी आर्य, श्री रमेश जी पाटीदार, श्री यज्ञमुनि जी वानप्रस्थी, श्री सन्तोष जी आर्य ग्राम के सरपंच श्री नाथूसिंग जी सैधव एवं ग्रामवासी उपस्थित रहें।

आर्य समाज बागली में चार दिवसीय वैदिक सत्संग एवं महायज्ञ का आयोजन मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल और आर्य समाज बागली के तत्वाधान में उपदेशक श्री आचार्य विश्वामित्र जी, भजनोपदेशक श्री दिलीप जी आर्य, श्री हरिओम जी सरल द्वारा यज्ञ एवं सुन्दर भजन प्रवचन प्रस्तुत किये गए जिसमें प्रातः 8 बजे से यज्ञ पश्चात प्रवचन हुए यज्ञ में 30 जोड़ो भाग लिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के प्रधान श्री प्रकाश जी आर्य पधारें उन्होंने वैदिक धर्म के बारे में सभी आर्यजन को सम्बोधित किया। जिसका ग्रामीणों ने लाभ लिया कार्यक्रम में आर्य समाज बागली, चापड़ा, देवगढ़, चिलखी, हाटपिपल्या, राजोदा, बैरी, आदि आर्य समाज के समस्त आर्य समाज के पदाधिकारी उपस्थित रहें आर्य समाज बागली के श्री डालूराम जी आर्य, श्री अशोक जी आर्य, श्रीमती चंचल आर्य महू, श्री शंकरसिह भाटी गायत्री मंदिर के पुजारी शर्माजी, पत्रकार ठाकुर साहब, आदि सैकड़ो श्रद्धालु उपस्थित रहें।

विशेष – इस उपलक्ष में कार्यक्रम में ग्राम पुंजापुरा तह. बागली जिला देवास में आर्य समाज की स्थापना के बारे में प्रधान जी से ग्रामवासियों ने चर्चा की।

समस्त संभागों के लिये सूचना

समस्त उपप्रधानजी / उपमंत्रीजी आपको पहले भी पत्र भेजकर सूचित किया गया है कि हमारा वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च है अतः अप्रैल मई तक समाजों द्वारा सभा को दशांश पहुंचा देना चाहिए। निर्वाचन नहीं हुए तब भी राशि तो भेज देनी चाहिए। कृपया इस पर ध्यान देवें। संभागों में जिला व तहसील प्रभारी मनोनीत करने का निर्णय लिया गया था। किन्तु खेद है इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा हैं।

विशेष – आपके संभाग में क्या उन्नति हुई, क्या क्या विशेष कार्य हुए आपने किन किन समाजों का निरिक्षण किया इस आशय की जानकारी प्रतिमाह कृपया महू भेजे। संभागीय सम्मेलन प्रत्येक संभाग में होना आवश्यक है किन्तु उस पर भी आप मौन हैं।

प्रवेश प्रारंभ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् सारे संसार को श्रेष्ठ बनावें **प्रवेश प्रारंभ**

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल

आगर सारंगपुर मेन रोड़, ग्राम मोहन बड़ोदिया जिला शाजापुर (म.प्र.)

मध्यप्रदेश का पहला कन्या गुरुकुल, मोहन बड़ोदिया जिला शाजापुर में **2018** से प्रारंभ हो गया है। सुन्दर, सर्वसुविधायुक्त, आवास व्यवस्था में गुरुकुल से शिक्षित आचार्य, शास्त्री के द्वारा शिक्षण व्यवस्था है साथ ही कक्षा **10** वीं तक मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल के अनुसार पढ़ाई की भी व्यवस्था है, जिसमें अंग्रेजी, साइंस, कम्प्यूटर प्रशिक्षण कक्षा **6** वीं से प्रवेश दिया जाता है।

इस हेतु आप निम्नलिखित नम्बरों से सम्पर्क कर सकते हैं :–

मो. 9826655117, 6261186451, 6267468984

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

अगली प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो-सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना■सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, म हबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचा धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म   एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का   र्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

❋ आर्य समाज के दस नियम ❋

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-23

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, प्रकाश आर्य द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - अतुल वर्मा, भोपाल

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062